



शोधामृत

(कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान की अंतर्राष्ट्रीय सहकर्म समीक्षित, मूल्यांकित, त्रैमासिक शोध पत्रिका)

ISSN : 3048-9296 (Online)

3049-2890 (Print)

IIFS Impact Factor-5.375

Vol.-3; issue-4 (Oct.-Dec.) 2026

Page No- 23-26

©2026 Shodhaamrit

<https://shodhaamrit.gyanvividha.com>

Author's :

1. सुजीत पाल

(शोधार्थी), हिंदी विभाग,
जगजीवन कॉलेज, आरा

2. डॉ. अमरेश कुमार

(शोध- निर्देशक), वरीय सहायक प्राध्यापक-
सह-विभागाध्यक्ष, हिंदी विभाग, जगजीवन
कॉलेज आरा, बिहार (वीर कुंवर सिंह
विश्वविद्यालय आरा, बिहार)

Corresponding Author :

सुजीत पाल

(शोधार्थी), हिंदी विभाग,
जगजीवन कॉलेज, आरा

समकालीन हिंदी कथाकार संजीव की कहानियों में स्त्रियां

शोध-सार : 1980 के दशक में समकालीन हिंदी कहानी ग्राम्य- जीवन, किसान, मजदूर, स्त्री, दलित एवं शोषित- वंचित समाज के सामाजिक सरोकारों से अत्यंत संजीदगी के साथ गहरे रूप में जुड़ चुकी थी। इस दौर के प्रमुख कहानीकारों में **संजीव**, उदय प्रकाश, निर्मल वर्मा, मिथिलेश्वर आदि प्रमुख रूप से आते हैं।

कथाकार संजीव जी की कहानियां मुख्यतः निम्न एवं निम्न-मध्यमवर्गीय समाज की समस्याओं, चिंताओं और उनकी मुक्ति की आकांक्षा से संबद्ध रही हैं। संजीव ने अपनी कहानियों में समकालीन सामाजिक परिस्थितियों का चित्रण करना, आधुनिक पारिवारिक संबंधों में बदलाव, स्त्री-पुरुष संबंधों में बिखराव, संयुक्त बनाम एकाकी परिवार, स्त्रियों की सामाजिक स्थिति, वर्गभेद, गरीबी, अशिक्षा, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, बाजारवाद और उपभोक्तावाद के दुष्परिणामों आदि का चित्रण किया है। उनकी कहानियों में स्त्री पात्र सिर्फ आदर्श या देवी के रूप में नहीं है बल्कि वह संघर्षशील व अपने अधिकारों के प्रति सजग तथा अन्याय का विरोध करने वाली सजग नारी है। उनके यहां स्त्री पात्र भले ही वह सामाजिक और पारिवारिक क्रूरता, अन्याय, लिंगभेद से टूट जाती है लेकिन वह हार नहीं मानती अपितु संघर्ष करके उस अन्याय का दमन करती हैं।

संजीव जी के कथा -साहित्य को लेके मधु कांकरिया जी कहती है कि संजीव जी की कहानियां हमेशा पाठक से प्रश्न पूछती है, “बदलाव का स्वप्न देखने वाले संजीव की कहानियां सर्वहारा समाज के तमाम मनुष्य विरोधी चेहरे को सामने लाती हैं। संजीव को पढ़ना उत्तर आधुनिक जीवन के सामूहिक अवचेतन में झांकने जैसा है। बिना अपनी पक्षधरता का शोर मचाए हुए पूरी निर्भीकता के साथ संजीव अपने समय और समय की हिंसक सत्ता संरचनाओं में भीतर तक धंसकर कथानक के रेशे- रेशे बुनते हैं।”

बीज-शब्द-शोषण, पराधीन, विस्थापन, सामंतवाद अंधविश्वास, भाग्यवादिता, पितृसत्तात्मक, भौगोलिकता, नक्सलबाड़ी, मार्क्सवाद।

मूल आलेख : आधुनिक हिंदी कथा साहित्य में संजीव जी एक सशक्त प्रतिभासम्पन्न संवेदनशील कथाकार के रूप में जाने जाते हैं। संजीव जी

की कहानियों में समकालीन भारत का सामाजिक भूगोल बदलता रहता है। उनके यहां गांव, कस्बा, जंगल, जमीन, हिंसा, प्रेम, सब मिलता है। संजीव जी की कहानियां पढ़ना मतलब भारत के उस हिस्से में जाना है जहां कैमरा टीवी देर से पहुंचते हैं, जहां अखबार अक्सर छोटी खबर बनाकर लौट आते हैं, जहां नेता चुनाव के समय जाते हैं और समाजशास्त्री कभी-कभी शोधपत्र के लिए।

हिंदी कहानी को यदि उसके विस्तृत फलक में देखा जाए तो संभवतः **संजीव** जी ऐसे विरले कथाकार हैं, जिनके कथा साहित्य का दायरा अत्यंत व्यापक है। जिसमें शहरी जीवन से लेके ग्रामीण जीवन तक, समुद्र से लेके हिमशिखर, खेत खलिहान तक तथा आदिवासी, नक्सलबाड़ी जैसे आंदोलन का विस्तृत वर्णन मिलता है। प्रसिद्ध कथालोचक रविभूषण लिखते हैं- “प्रेमचंद और यशपाल को छोड़कर हिन्दी में इतने बड़े कथा-फलक का कोई अन्य कथाकार नहीं है।”

कथाकार संजीव जी का जन्म 6 जुलाई, 1947 को जनपद सुल्तानपुर उत्तरप्रदेश में हुआ। यानि आजाद होते हुए भारत के साथ ही। उनकी रचना दृष्टि के निर्माण में जहां एक तरफ देश राजनीतिक रूप से स्वतंत्र हो रहा था वहीं दूसरी तरफ समाज में उच्च-नीच, छुआछूत, भूख, विस्थापन का दंश, स्त्री की उपेक्षा, बाजार और सामंतों का प्रभाव आदि प्रमुखता से है। संजीव जी की कहानियों में ऐसे अधूरे भारत की झलक दिखती है, जिसे संविधान ने नागरिक तो बना दिया, लेकिन जीवन में अब भी बराबरी नहीं दी। उनकी कहानियां सिर्फ मनोरंजन का साधन मात्र नहीं हैं, अपितु सम्पूर्ण मानव समाज को बचाने की चेष्टा हैं। जब बाजार और विकास मनुष्य को पीछे छोड़ दे, जब सत्ता की नजर में मनुष्य सिर्फ आंकड़े मात्र रह जाए और जब समाज अपने से कमजोर लोगों से नजरे चुराए तब संजीव जी कहानियां और भी प्रासंगिक हो जाती हैं।

संजीव जी की कथा दृष्टि इसलिए भी बड़ी है, क्योंकि वह कथा लिखने से पहले खुद परत दर परत उसकी सत्यता को जांचते हैं। हिंदी साहित्य में शोधात्मक लेखन के लिए भी उन्हें जाना जाता है। संजीव जी केवल सामाजिक दुःख की रिपोर्टिंग मात्र नहीं करते, अपितु वह सामाजिक दुःख के कारणों की खोज भी करते हैं।

संजीव जी की कहानियों में स्त्री-पात्र विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। उनकी कहानियों में स्त्रियां सिर्फ करुणा की पर्याय भर नहीं हैं, बल्कि वह चेतना की वाहक हैं। वे सामाजिक प्रभाव से टूटती जरूर हैं, लेकिन बस टूटती भर नहीं हैं, वह समाज की असली क्रूरता को उजागर करती हैं। वह बिन बोले ही सबकुछ बोलती हैं। भारतीय समाज में स्त्री की उपेक्षा सिर्फ घरेलू घटना तक ही सीमित नहीं है, बल्कि वह संपूर्ण मानव सभ्यता का नैतिक पतन है।

संजीव जी की कहानी संग्रह **‘आप यहां हैं’** में संग्रहित कहानी **‘जसी बहु’** में भारतीय ग्रामीण जीवन में जटिल सामाजिक संरचना, जातिगत विभाजन, पितृसत्तात्मक मानसिकता और स्त्री-शोषण की बहुस्तरीय प्रक्रियाओं का सशक्त चित्रण प्रस्तुत करती है।

कहानी की नायिका जसी बहु स्वाभिमानी, श्रमिशील और संघर्षशील स्त्री है, जो तमाम प्रतिकूलताओं के बीच जब उसका पति बाहर चला जाता है तो, उसके बाद जसी बहु अकेले पूरी गृहस्थी संभालती है। यही आत्मनिर्भरता और स्वाभिमान उसे गांव के उच्चवर्गीय सामंती लोगों की आंख का किरकिरी बना देता है।

इसी कहानी संग्रह की एक अन्य कहानी **‘कठपुतली’** है जिसमें संजीव जी ने कहानी की मुख्य पात्र कल्याणी के जीवन के माध्यम से एक नारी की विवशता और हमारे समाज में उस नारी की स्थिति बिल्कुल कठपुतली जैसी होना दिखाया है। पुरुष प्रधान समाज में उस स्त्री को उसके पिता द्वारा बेचे जाने के उपरांत एक सेठ द्वारा उसे रखैल बना लिया जाता है, वह ताउम्र एक वैध पत्नी का हक पाने से दूर रही, संजीव जी समाज से प्रश्न करते हैं क्या स्त्री कोई वस्तु है जिसे बाजार से खरीदा जा सकता है?

संजीव जी के एक अन्य कहानी संग्रह **‘प्रार्थना’** में संकलित कहानी **‘महामारी’** में भारतीय ग्रामीण जीवन में उस असहाय स्त्री का चित्रण करते हैं, जो आपदा के कठिन समय में भी अपने बच्चों और परिवार का पालन

पोषण करती है, जबकि वह खुद कई बार भूखी रह जाती है। महामारी के कठिन दौर में भी उसका परिवार समाज की कुरीतियों जैसे निरक्षरता, भाग्यवादिता और अंधविश्वास का पोषक होता है।

संजीव जी की **‘घर चलो दुलारी बाई’** कहानी की प्रमुख पात्र एक विधवा नारी है। संजीव जी इस कहानी में दुलारी बाई के माध्यम से भारतीय समाज में विधवा नारी की वेदना, शोषण और घुटन भरा जीवन दिखाया है, तथा कहानी में जब उसका पति मर जाता है तब उसके ससुराल वाले उसके बच्चे को मार डालते हैं, कि कहीं उसको जमीन जायदाद का हिस्सा न देना पड़े। तत्पश्चात् जब वह न्याय के लिए किसी का सहारा लेती है, तो उसे चरित्रहीन साबित कर दिया जाता है। दोषयुक्त भारतीय न्याय व्यवस्था उसे न्याय नहीं दे सकती।

मानवीय रिश्तों की पड़ताल करने वाली कहानी **‘मां’** में भारतीय समाज में मां के जीवन के अनछुए एवं मार्मिक पक्षों का उद्घाटन किया गया है, जो मां स्वार्थविहीन होकर ताउम्र अपने बच्चों को लाड़ प्यार देती है, वहीं बच्चे बड़े होकर कितना अपने मां के सपनों को पूरा करते हैं? सामाजिक आक्षेप होने पर वे भी मां का साथ छोड़ कर अपना स्वतन्त्र जीवन जीने लगते हैं।

संजीव जी की एक ऐसी ही कहानी **‘झूठी है तेतरी दादी’** जिसमें संजीव जी छोटी जाति की एक ऐसी स्त्री की विलक्षण कथा बताते हैं, जिसको साठ साल पहले ट्रेन से एक गठरी की तरह फेंक दिया गया था। जब उसकी पहचान खुलती है तो, न ही उसके ससुराल पक्ष के लोग और न ही मायके पक्ष के लोग स्वीकारते हैं।

जब तेतरी वापस अपने मायके आती है, तब स्त्रियों में बहस छिड़ जाती है.. “ई है औरत की जिनगानी जहां जात बड़ा है आदमी से। जहां आंख पर पट्टी बांधकर लाया गया था काम पूरा होने पर पट्टी बांधकर छोड़ दिया गया। न नैहर के, न सासुर के। औरत इन्हा आदमी ना है, एक बटुआ है सिरीफ एक बटुआ।”

संजीव जी की एक अन्य चर्चित कहानी ‘मानपत्र’ है जिसमें संजीव जी सम्पूर्ण पुरुष जाति के स्वार्थ, अहम, स्वेच्छाचार और कमीनेपन के विरुद्ध अभियोग – पत्र है। कथा की नायिका वीणा पुरुष समाज को झकझोर कर कहती है.. “तुम्हारी हवस किसी एक धर्म की खाल में समा ही नहीं सकती, तुम्हें चार नहीं, चार सौ नहीं, चार सहस्र औरतें भी कम पड़ेगी। यही प्रेरणा है तो बन जाओ सहस्रयोंनि”⁸

भारतीय समाज में स्त्री उपेक्षा को संजीव जी इस तरीके से दिखाते हैं कि वह पोखरे में फेंकी गई गुड़िया की तरह अपनी लाश बनकर जीती जा रही है। कहाँ जाएंगी कुछ पता नहीं? सभ्यता के अतीत से लेकर वर्तमान और स्त्री के प्रति नजरिए को समेटते हुए ग्रामीण आंचल पर भी लेखक की कलम ऐसे चलती है, जैसे फोटो खींचता हुआ कैमरा।

कथाकार संजीव जी द्वारा रचित कहानी संग्रह **‘दुनिया की सबसे हसीन औरत’** एक बेहद चर्चित और यथार्थवादी कहानियों का संग्रह है। इस कहानी संग्रह में लेखक पारंपरिक और बाह्य सौंदर्य की परिभाषा को पूरी तरह बदल दिया है। इस संग्रह में संकलित कहानी दुनिया की सबसे हसीन औरत में संजीव जी के अनुसार दुनिया की सबसे हसीन औरत वह नहीं है जो रूप रंग में श्रेष्ठ हो, बल्कि वह स्त्री है, जो अपने अधिकारों, जीवन और सम्मान के लिए संघर्ष करती हो और हमेशा अन्याय का विरोध करती हो। प्रस्तुत कहानी में एक आम आदिवासी कामकाजी महिला (सब्जी बेचने वाली) विषम से विषम परिस्थितियों में भी अपना जीवन निर्वाह कर रही है। और वह उस विषम परिस्थितियों से निरंतर लड़ रही है न कि उनसे हार मानकर बैठ जा रही है।

संजीव जी की कहानियां हमें यह सोचने पर मजबूर कर देती हैं कि, क्या कहानी का अंत लेखक द्वारा लगाए गए पूर्णविराम पर ही खत्म हो जाती है या उसके बाद भी वह कहानी हमारे मन मस्तिष्क में सवाल पैदा करती है कि, अगर उस पात्र को समाज ने सहारा दिया होता तो क्या होता? अर्थात् वह हमसे सवाल करती है और हमें सोचने पर मजबूर कर देती है। वास्तव में यही एक लेखक का कथा कौशल होता है जो लेखक को औरों से अलग बनाता है।

संजीव जी के पास भाषा की कला है। वे भाषा को अपने लेखकीय रचनाकौशल का प्रदर्शन नहीं बनाते। उनकी भाषा पात्रों की स्थितियां, उनकी भौगोलिकता और उनकी परिस्थितियों से निकलती है। उनकी भाषा में देशज शब्द है, लोक की लय है, बोलियों की धड़कन है और साथ ही आधुनिक विवेक की कसावट भी। वे कथा को सजाते नहीं बल्कि उसे उसके वास्तविक रंग, गंध और ताप के साथ प्रस्तुत करते हैं। उनकी भाषा कथा के पात्रों के अनुरूप होती है। यदि पात्र शिक्षित है तो भाषा खड़ी बोली रूप में अगर पात्र ग्रामीण है तो, उनके स्थानीय रूप में भाषा का प्रयोग दिखाई देता है।

निष्कर्ष : निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि कथाकार संजीव जी समकालीन हिंदी कहानी के एक महत्वपूर्ण कड़ी हैं, जो प्रेमचंद के सामाजिक चिंता से जुड़े हुए, रेणु जी के आंचलिक संवेदना को ग्रहण करते हुए, मुक्तिबोध के वैचारिक बेचैनी और समकालीन कथा साहित्य के संरचनात्मक विमर्श को अपनी लेखनी में उतारते हैं। लेकिन वह किसी की नकल नहीं करते, बल्कि स्वयं अपना कथा-भूमि निर्मित करते हैं। नक्सलबाड़ी आंदोलन हो या मार्क्सवाद का प्रभाव संजीव जी की कहानियों में साफ तौर पर देखा जा सकता है। मुंशी प्रेमचंद जी जहां दुनिया का सबसे अमूल रत्न खून के आखिरी कतरे को माना वहीं संजीव जी दुनिया की सबसे हसीन औरत, संघर्ष करती हुई और गलत का प्रतिरोध करती हुई स्त्री को माना।

संदर्भ- सूची :

1. मधु कांकरिया, धरती पर मनुष्य को बचाने की चेष्टा है ये कहानियां(भूमिका), प्रतिनिधि कहानियां:संजीव ।
2. रविभूषण, स्वतंत्र भारत की वास्तविक कथा, संजीव की कहानियां, पहल कथा समय : दो, फरवरी 2000।
3. संजीव, आप यहां है, जसी बहु, अक्षर प्रकाशन नई दिल्ली, 1984।
4. संजीव, प्रार्थना, महामारी, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, 2024।
5. संजीव, रामलीला तथा अन्य कहानी, घर चलो दुलारी बाई, नई किताब प्रकाशन 2020।
6. संजीव, झूठी है तेतरी दादी -2, वाणी प्रकाशन 2012 ।
7. संजीव, प्रतिनिधि कहानियां, झूठी है तेतरी दादी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली 2025, पृष्ठ.72
8. संजीव, प्रतिनिधि कहानियां(भूमिका), राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2025, पृष्ठ.13

•